पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.) (संशोधित)

सत्रीय कार्य
2023—2024

(जुलाई 2023 और जनवरी 2024 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली—110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

पाठ्यक्रम 01 से 05 (एम.टी.टी-051 से 055)

सत्रीय कार्य 2023–2024

(जुलाई 2023 और जनवरी 2024 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (संशोधित) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए पाँच पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जुलाई 2023 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जनवरी 2024 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–051 : अनुवाद : सिद्धांत और परंपरा	31.03.2024	30.09.2024
एम.टी.टी.–052 : अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि	31.03.2024	30.09.2024
एम.टी.टी.–053 : अनुवाद : भाषिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ	31.03.2024	30.09.2024
एम.टी.टी–054 : प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद	31.03.2024	30.09.2024
एम.टी.टी.–055 : अनुवाद : साहित्य और जनसंचार	31.03.2024	30.09.2024

*नोट : कृपया सभी सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि से पूर्व अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि अवश्य भेज दें। ध्यान दें कि सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

<u>आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :</u>

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ....
	नाम : ....
	पता : ....
	....
पाठ्यक्रम कोड :..	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर :...
अध्ययन केंद्र का नामः	तिथि : ....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200–250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

एम.टी.टी.–051

अनुवाद : सिद्धांत और परंपरा

सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–051

सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–051/टीएमए/2023–24

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए :

1. अनुवाद के महत्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। 10

2. अनुवाद की सीमाओं व समस्याओं का वर्णन कीजिए। 10

3. अनुवाद कर्म के दौरान भाषिक एवं सांस्कृतिक स्तर की चुनौतियों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 10

4. अस्मिताओं के अनुवाद से आप क्या समझते हैं? वर्णन कीजिए। 10

5. पुनर्सृजन के रूप में अनुवाद की अवधारणा और आयामों पर प्रकाश डालिए। 10

6. अनुवाद की पाश्चात्य परंपरा के बारे में आप क्या जानते हैं? स्पष्ट कीजिए। 10

7. अनुवाद के आधुनिक भारतीय सिद्धांतों की चर्चा कीजिए। 10

8. उत्तर आधुनिक पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांत की विशेषताओं का आकलन कीजिए। 10

9. अनुवाद में संस्कृति की केंद्रीयता पर प्रकाश डालिए। 10

10. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 250–250 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5x2=10

    क) उत्तर औपनिवेशिक अनुवाद सिद्धांत
    ख) कनाडाई अनुवाद परंपरा

*****

एम.टी.टी.–052
अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–052
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–052 / टीएमए / 2023–24
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खंड–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए :

1. अनुवाद की प्रविधि से क्या अभिप्राय है? अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 10

2. अनुवाद पुनरीक्षण के अर्थ और प्रक्रिया का विवेचन कीजिए। 10

3. पारिभाषिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं? पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी विभिन्न विचारधाराओं का सोदाहरण परिचय दीजिए। 10

4. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 250–250 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5x2=10
   क) 'रूपांतरण' शब्द–प्रयोग की व्याप्ति
   ख) कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश में अंतर

5. कम से कम पाँच महत्वपूर्ण कोशों के नाम बताइए। 5

6. निम्नलिखित हिंदी शब्दों को हिंदी वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित कीजिए : 5

   रक्त, रूपांतरण, रिवाज़, राशि, रुद्राक्ष, रूपिम, रौरव, राशन, राक्षस, रोजगार, रचनात्मक, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीयता, राकेश, रेशम

7. निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों को वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित कीजिए : 5

   staple, strategy, soccer, sapling, supreme, suppress, satisfied, sacrifice, sportsmanship, slot, symphony, sinking, stain, surrounding, satire

8. निम्नलिखित शब्दों का रोमन / देवनागरी में लिप्यंतरण कीजिए : 5

कँवलजीत	Constitution
क्षेमचंद्र	poverty
भर्तृहरि	wrestler
ज्ञानेंद्र	psychology
त्रिलोकीनाथ	fracture

9. पाठ्यक्रम में पारिभाषिक शब्दावली संबंधी किए गए अध्ययन के आलोक में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की निम्नलिखित तकनीकों/युक्तियों के आधार पर निर्मित बीस पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय लिखिए :

क) हिंदी में अंगीकृत पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय
ख) हिंदी में अनुकूलित पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय
ग) हिंदी में नव–निर्मित पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय
घ) हिंदी में अनूदित पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय 20

10. निम्नलिखित सामग्री का हिंदी में सारानुवाद कीजिए : 10

Leadership development has now become the top priority for HR (human resource) professionals with emphasis on leadership as a core capability of all employees across sectors. This new trend has replaced engagement, according to a survey conducted by the Top Employers Institute globally.

There is also a shift towards individuals being responsible for their own development needs. This leads to customized leadership development programmes. Many high-growth organizations in India have a relatively large proportion of millennials in leadership positions. They drive the change in leadership development methods as they prefer to use innovative means for personal development over traditional methods such as formal workshops, training courses and development assignments, in line with the global trend of developing leadership skills individually.

With companies becoming less hierarchical and opting for flatter structures, it is noticeable that they are starting to identify future leaders not by job title or position but by influence and performance. And those future leaders are beginning to get the opportunity to gain broader life and commercial skills, and to step outside their comfort zone, by undertaking challenging projects, either inside the organization or externally, usually outside the scope of their main role. This broader approach to self-development is important as ownership for personal development rapidly shifts to the individual, no longer residing with human resources or line managers, says the report.

With individual ownership also comes the need for a different mindset. Some of the top employers offer training around resilience and mindfulness to help employees make this transition. Intrinsically linked to this mindset is an understanding of wellbeing and a balance between food, rest and exercise, and companies need to encourage this within all employees. We need to make sure that the next generation of leaders do not reach ‘burn out’. As most now operate in an always online, always connected business environment the need to alleviate both stress and the pressure of always being ‘present’ should be very much a part of self development, the report says.

The leadership Development report is based on the findings of the top employers HR Best Practices Survey that surveyed 600 certified organizations in 99 countries and included a sample size of 3,000 employees.

11. नीचे दिए गए अंग्रेजी पाठ और उसके हिंदी अनुवाद को सावधानी से पढ़िए और अनूदित पाठ का पुनरीक्षण कीजिए: 10

मूल :

Treatment options for the depressed child

Psychotherapy or talk therapy has by far been the most effective in treating the depressed child. Under talk therapy we have cognitive therapy, behavioral therapy and what Dr John White, psychiatrist and author of the book *The Masks of Melancholy,* calls grief work. Talk therapy in a nutshell essentially helps a child deal with negative thinking and distorted interpretations of their world. Leading researcher Dr. Paul O' Callaghan in his work among sexually abused children of the Democratic Republic of Congo was immensely successful as he used psychotherapy. Children were encouraged to draw pictures of their traumatic experiences and were encouraged to talk about their feelings in individual sessions.

The use of antidepressants in children is widely debated. The US Food and Drug Administration (FDA) warns against its use among children citing severe side effects. However, antidepressants are still used in very severe cased of depression in children. Parents are often the last to recognize depression in their children and the frustrations of dealing with a depressed child may compound the difficulty before they become fully aware of it. I hope this article will help some parent somewhere to recognize a depressed child and help them overcome their depression.

हिंदी अनुवाद :

तनावग्रस्त बच्चे का इलाज

साइकोथेरेपी या बातचीत इलाज तनावग्रस्त बच्चे के इलाज की सबसे उत्तम विधि है। इसमें ज्ञानात्मक इलाज, व्यवहार संबंधी चिकित्सा व जिसे मनोचिकित्सक व द मॉस्क ऑफ मेलनकोली के लेखक डॉक्टर जॉन व्हाईट, विषाद वर्णन कहते हैं, शामिल हैं बातचीत से इलाज मूलतः बच्चे को नकारात्मक सोच और अपनी दुनिया की विकृत व्याख्याओं से बचाती है। ख्यात अनुसंधित्सु डाक्टर पाल ओ केलेघन ने डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में यौन शोषण से ग्रसित बच्चों के बीच दीर्घावधि तक कार्य किया। उनका अनुभव है यह कि साइकोथेरेपी ने इन बच्चों को सामान्य जीवन जीने में सहायता की। बच्चों से यह कहा गया कि वे जिस भयावह अनुभाविकता से गुजरे हैं, उसके चित्र बनाएं और उसके बारे में बात करें। जाहिर है कि यह बातचीत अकेले में की जाती थी।

बच्चों के अवसाद के इलाज के लिए तनाव अवरोधक (एन्टीडिप्रेसेंट) दवाओं का प्रयोग किया जाना चाहिए अथवा नहीं, इस पर गंभीर मतभेद हैं। अमेरिका का फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन इसके खिलाफ है क्योंकि इन दवाओं के ढेर सारे साइड इफेक्ट्स होते हैं। परंतु गंभीर रूप से तनावग्रस्त बच्चों के इलाज के लिए एंटीडिप्रेसेंट दवाओं का प्रयोग किया जाता है।

अक्सर माता–पिता अपने बच्चों में तनाव के लक्षण पहचान नहीं पाते और तनावग्रस्त बच्चे के लालन–पालन में आने वाली कठिनाइयां उन्हें कुंठित–परेशान करती हैं। हमें उम्मीद है कि यह अनुच्छेद, माता–पिता को उनके बच्चों में तनाव के लक्षणों की पहचान करने में मदद करेगा और वे अपने बच्चों को तनाव से मुक्त कर सकेंगे।

*****

एम.टी.टी.–053
अनुवाद : भाषिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–053
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–053 / टीएमए / 2023–24
अधिकतम अंक : 100

---

1. भाषा की प्रकृति और स्वरूप की विस्तृत चर्चा कीजिए। 10

2. भाषा प्रयुक्ति से आपका क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित समझाइए। 10

3. बहुभाषिक समाज में अनुवाद के महत्व को रेखांकित कीजिए। 10

4. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी / अंग्रेजी पर्याय लिखिए : 10
amplifier, epiderm, angle, deploy, sundry, संकेतक, विलयन, स्थानापन्न, जमापत्र, बीजक

5. नीचे दिए गए प्रश्न–पत्र का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

MASTER OF ARTS (HISTORY)

Term-End Examination

MHI-03 : HISTORIOGRAPHY

Time : 3 hours Maximum Marks : 100 (Weightage : 70%)

Note : Answer any five questions in about 500 words each. Attempt at least two questions from each section. All questions carry equal marks.

SECTION - A

1. What is objectivity? Discuss the critique of objectivity. 20
2. Discuss the early traditions of history writing in China. How did Confucius contribute in its development ? 20
3. Write a note on Arabic history writing tradition. 20
4. What do you understand by Annales school ? Discuss its contribution in history-writing. 20
5. Write short notes on any two of the following in about 250 words each : 10+10
(a) Generalisation in history.
(b) Prasastis and Charitas
(c) Official Histories of Akbar's reign.
(d) History of tribal movements.

SECTION - B

6. Define racism. What are the different perspectives for the study of racism in modern times ? 20
7. Write an essay on colonial historiography. 20
8. Give a brief account of writings on history from below in the Indian context. 20
9. How did the communal view of Indian history evolve? Provide a critique of it. 20
10. Write short notes on any two of the following in about 250 words each : 10+10
(a) Local History
(b) Rankean tradition of history writing.
(c) Feudalism debate among Indian historians.

(d) History of Environment and Science.

---

6. निम्नलिखित में से प्रत्येक उपसर्ग का प्रयोग करते हुए चार–चार शब्द बनाइए। 5

कु–, अन–, निः–, अति–, अनु–

7. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रत्यय का प्रयोग करते हुए चार–चार शब्द बनाइए। 5

–आई, –आन, –ता, –ई, –आलू

8. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10x2=20

A) The government has given itself a 90-day breather to implement transparency provisions under the Lokpal law and has set September 15 as the deadline for government servants to file their assets and liabilities declaration.

Under the Lokpal law, all government servants irrespective of their rank will have to declare their assets and liabilities every year.

The assets declarations for central government employees will be put in public domain.

Government sources said orders were issued for giving officials some more time since conduct rules for different services and ranks were yet to be finalized in light of the suggestions received from various cadre controlling authorities.

On its part, the Department of Personnel and Training (DoPT) has laid down the process and finalized the ground rules to be followed by public servants in this regard.

The Lokpal and Lokayukta Act 2013 had made it mandatory for every public servant to make the annual declaration and not just senior officials, as required under existing provisions.

Under rules notified by DoPT last week, the competent authority would have discretion to exempt public servants from declaring assets valued at less than four months' basic salary or Rs. 2 lakh.

Government officials said the exemption clause had been incorporated so that the exercise to improve transparency did not end up harassing public servants.

The DoPT also has adapted declaration forms for assets and liabilities filed by candidates in Lok Sabha and assembly elections to enlarge the scope of the forms.

'The original version of the forms left room for officials to provide vague information or skip certain information. This would not be possible in the new formats,' a government official said, pointing to provisions that require officials to declare the weight and value of jewellery owned by them, spouse and dependents.

The practice of government officials declaring their assets – and information about their immovable assets being made public – is only a couple of years old.

B) Loni and Mandoli situated on the out-skirts of Delhi are at great risk of being permanently damaged by toxins released from e-waste, a city-based environmental organization has found.

According the Toxic Link's report 'Impact of E-waste Recycling on Water and Soil', toxic elements like mercury, lead and zinc along with acids and chemicals released during e-waste recycling are contaminating soil and water in the surrounding areas of Delhi.

After laboratory testing of soil and water samples, the report found water and soil contaminated with heavy metals and other contaminants.

Both Loni and Mandoli have multiple recycling units engaged in hazardous processes for recovery of materials from e-waste.

"It was found that both sites discharge their effluents into open lands in the absence of drains. They also dispose of their solid waste in open lands, while most residual matter is disposed by open burning causing severe damage to the environment," Programme Coordinator of Toxics Link, Prashant Rajankar said.

Drinking water contains exorbitant amount of toxic metal at both the locations. At Loni, some samples of water reveal mercury level as high as 20 times the prescribed limit. The level of zinc in a sample was 174 times higher at Mandoli.

"Increased amount of toxic elements are clear indicator that water at both the places is not fit for drinking. Toxic metals such as lead and zinc slowly damage vital organs and also reduce the IQs and understanding capabilities of children," Rajankar said.

Similarly, soil samples suggest that the soil characteristics have changed significantly. The findings also show lead level in soil at Loni to be very high, with one sample as high as 147 times the prescribed limit. At Mandoli, lead level in one of the samples is 102 times higher than the prescribed limit.

9. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10x2=20

क) हमारे देश में अनियोजित शहरीकरण हुआ है। शहरीकरण के नाम पर नियम–कानूनों के खुले उल्लंघन की इजाजत दी जाती है। अतिक्रमण, अवैध निर्माण और अनधिकृत कॉलोनियों का विकास इसकी जीती–जागती मिसाल है। लगभग हर शहर में ऐसी अनधिकृत कॉलोनियाँ उभर आई हैं जो भ्रष्ट अफसरों और वोट के लिए चिंतित राजनेताओं की मिलीभगत की देन है। कई बार तो ऐसी रिहायशी कॉलोनियों में छोटे–छोटे बाजार भी बन जाते हैं या फिर संकरी सड़कों पर दुकानें खुल जाती हैं जो अक्सर दुर्घटना का कारण बनती हैं। जब कभी अवैध कॉलोनियों के खिलाफ प्रशासनिक सख्ती की नौबत आती है तो एक किस्म का जनांदोलन खड़ा हो जाता है, जिसे पूरा राजनीतिक संरक्षण मिलता है। जनता का यही दबाव कॉलोनियों को नियमित करने का आधार बनता है। न्यायपालिका ने न जाने कितनी बार अवैध कॉलोनियों के निर्माण

पर सरकारों को फटकार लगाई, लेकिन आम आदमी के हितों का हवाला देकर उनकी अनदेखी ही करना उचित समझा गया। इस चिंताजनक सिलसिले को समाप्त होना ही चाहिए। यह विचित्र है कि एक ओर हम भारत को विकसित देश बनाने की कल्पना करते हैं तथा दूसरी ओर नियम–कानूनों के उल्लंघन के कारण समाज में अराजक स्थितियाँ भी उत्पन्न करते जा रहे हैं। वास्तव में नियम–कानूनों के साथ अनुशासन को एक सामाजिक संस्कार के रूप में अपनाकर ही हम एक सशक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं।

ख) भाषा, व्यक्ति के भावों–विचारों को मौखिक अथवा लिखित रूप में अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। यह समाज में प्रतिफलित होती है। भाषाविज्ञान का संबंध भाषा से है और वह भाषा को दो दृष्टियों से देखता है। एक दृष्टि शुद्ध भाषाविज्ञान से संबंधित है जो यह बताती है कि भाषा क्या है, उसकी व्याकरणिक व्यवस्था कैसी है और भाषा–संरचना संबंधी उसके नियम क्या हैं, उसकी क्षमता क्या है। इस दृष्टि का आधार यह है कि भाषा समाज में प्रतिफलित होने पर भी सामाजिक संदर्भों से मुक्त है। यह वस्तुतः विशुद्ध रूप से भाषा के रचना प्रकार से संबंधित है। जबकि भाषाविज्ञान में भाषा को देखने संबंधी दूसरी दृष्टि का आधार भाषा का व्यावहारिक पक्ष है। समाजभाषाविज्ञान के नाम से परिचित भाषाविज्ञान की इस उपशाखा के अनुसार भाषा को अपने समस्या वैविध्य में देखने का प्रयास किया है। समाजभाषाविज्ञान में यह माना जाता है कि भाषा के विभिन्न रूपों का प्रादुर्भाव जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार होता हे। भाषा के ये विभिन्न रूप वस्तुतः भाषा के यथार्थ एवं वास्तविक रूप हैं। भाषा–प्रयुक्ति का संबंध भाषाविज्ञान की इसी दृष्टि से है। इस दृष्टिकोण से यह बोध होता है कि भाषा किन प्रयोजनों को साधती है, भाषा–प्रयोक्ता भाषा से क्या काम लेते हैं। विविध स्थितियों एवं विषयों में भाषा–व्यवहार की एक निश्चित परिपाटी होती है, जो समान रूप से स्वीकृत होती है। व्यक्ति अपने व्यवहार में जाने–अनजाने इस निश्चित परिपाटी का पालन करता है। इसी के आधार पर जीवन के विविध क्षेत्रों में भाषा के विशिष्ट अथवा व्यवहार क्षेत्र बनते हैं। इन्हीं प्रयोगों अथवा व्यवहार–क्षेत्रों से भाषा में प्रयुक्ति की संकल्पना का उद्भव हुआ।

*****

एम.टी.टी.–054
प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–054
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–054 / टीएमए / 2023–24
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. 'प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता एवं स्थिति' पर निबंध लिखिए। 10

2. 'संसद में अनुवाद' विषय पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 10

3. बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10

4. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 250–250 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5x2=10
   क) पर्यटन साहित्य–अनुवादक में अपेक्षित गुण
   ख) विधि के क्षेत्र में हिंदी

5. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय बताइए : 10

   (1) quasi-permanent, (2) relief and rehabilitation, (3) security deposit, (4) standing order, (5) travelling allowance bill, (6) utilization certificate, (7) verbal agreement, (8) underground rail, (9) inspection certificate (10) rural works programme (11) advance copy, (12) budget grant, (13) drawing and disbursing, (14) dispatch register, (15) introductory lecture, (16) informal education, (17) joint resolution, (18) polling station, (19) notification (20) fiscal policy.

6. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के हिंदी पर्याय लिखिए : 10
   1. according to convenience
   2. ban on future promotion
   3. checked and found correct
   4. day to day administrative work
   5. explanation may be called for
   6. governed by rules
   7. his request is in order
   8. in the prescribed manner
   9. matter is under consideration
   10. please comply before due date

7. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए: 10X3=30

(A) The Constitution is not merely a lifeless book. It is a dynamic process. It deals with functioning institutions and it comes to have meaning only from how it is operated and by whom it is operated. The citizens are concerned with the Constitution as it affects their lives; as it governs them. While a document is an inert lifeless thing the Constitution is a living dynamic reality. It is always developing. The Constitution of India was developing and taking shape even before independence and it continued to be made even after independence in 1947 or even after 26 January 1950. In the

Constitution of India there are eleven duties mentioned as Fundamental Duties of every citizen. The very first duty of every citizen is to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions. But, how many citizens of India, even among the educated, know, firstly that there is a separate part devoted to fundamental duties? We all know about fundamental rights and seek them all the time. But majority of us do not know that there are fundamental duties of citizens also. Secondly how many of us know the Constitution.

(B) Retail sector in India is the one of the more prominent sectors contributing to over 10% of GDP besides being the second largest contributing to over 8% of employment generated in the country. Although the retail sector in India is highly fragmented into large, organized retailers and small medium retailers, it employs a vast workforce of more than 40 million people. According to a report by Confederation of Indian Industry (CII), a cohesive National Retail Policy can help in generating more than 3 million jobs by the year 2024. Retail is a people-intensive industry that is greatly driven by the attitudes of customers, thus, most companies seek to develop skilled human resource as other resources can be replicated or standardized in today's competitive market, ensuring that the demand for skilled manpower remains strong in the industry. Over the past decade, a steady growth in retail which is set to cross the $1.75 trillion mark by 2026 from $795 billion in 2017 and E-commerce which is set to be worth $200 billion by 2026 from $30 billion in 2019 at 30% other sectors has opened a huge gateway for employment opportunities for youth as consumption of retail goods and services is projected to increase in the years to come.

(C) The government has given itself a 90-day breather to implement transparency provisions under the Lokpal law and has set September 15 as the deadline for government servants to file their assets and liabilities declaration. Under the Lokpal law, all government servants irrespective of their rank will have to declare their assets and liabilities every year. The assets declarations for central government employees will be put in public domain.

Government sources said orders were issued for giving officials some more time since conduct rules for different services and ranks were yet to be finalized in light of the suggestions received from various cadre controlling authorities. On its part, the Department of Personnel and Training (DoPT) has laid down the process and finalized the ground rules to be followed by public servants in this regard. The Lokpal and Lokayukta Act 2013 had made it mandatory for every public servant to make the annual declaration and not just senior officials, as required under existing provisions.

Under rules notified by DoPT last week, the competent authority would have discretion to exempt public servants from declaring assets valued at less than four months' basic salary or Rs. 2 lakh. Government officials said the exemption clause had been incorporated so that the exercise to improve transparency did not end up harassing public servants. The DoPT also has adapted declaration forms for assets and liabilities filed by candidates in Lok Sabha and assembly elections to enlarge the scope of the forms.

‘The original version of the forms left room for officials to provide vague information or skip certain information. This would not be possible in the new formats,’ a government official said, pointing to provisions that require officials to declare the weight and value of jewellery owned by them, spouse and dependents. The practice of government officials declaring their assets – and information about their immovable assets being made public – is only a couple of years old.

8. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

आज का युवा शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ एक मानसिकता तैयार कर लेता है कि उसे नौकरी करनी है और उसे मालिक नहीं नौकर बनना है। इस मानसिकता के कारण उसे सदैव परेशानियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि आज के दौर में बढ़ती हुई आबादी के अनुसार नौकरियाँ सीमित हैं। इसलिए जरूरी है कि युवाओं में शिक्षा के साथ–साथ कौशल का विकास भी किया जाए जिससे आज का युवा–वर्ग स्व–रोजगार को अपनाकर न केवल स्वयं स्वावलंबी बनें बल्कि और चार साथियों को भी रोजगार देने में सक्षम हों।

आज के दौर में युवाओं को यह सोच अवश्य विकसित करनी चाहिए कि जब वे स्वयं मालिक बनेंगे तो दस और लोगों को रोजगार देने में सक्षम हो सकेंगे। इस सोच के साथ शिक्षा सहित स्व–रोजगार की ओर ध्यान देना, आज के समय की मांग है। इसलिए युवाओं को स्व–रोजगार अपनाने के लिए कौशल विकास केंद्र तथा अन्य ऐसे केंद्र, जो तकनीकी तौर पर उन्हें स्वावलंबी तथा हाथ के हुनर में सक्षम करें, की सहायता लें और स्व–रोजगार को अपनाकर खुद के साथ–साथ अपने आसपास रह रहे युवाओं को भी स्वावलंबी बनाने का कार्य करें।

स्वावलंबन के लिए अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें रुचि के अनुसार कौशल प्राप्त कर अपने जीवन को सरल एवं सुखद बनाया जा सकता है। स्व–रोजगार के लिए जब शुरू की है तो ध्यान कौशल विकास केंद्रों में दी जाने वाली शिक्षा पर भी अवश्य जाना चाहिए।

*****

एम.टी.टी.–055
अनुवाद : साहित्य और जनसंचार
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–055
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–055/टीएमए/2023–24
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. साहित्यानुवाद के महत्व एवं प्रक्रिया की चर्चा कीजिए। 10

2. नाटक के अनुवाद में किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10

3. 'श्रव्य माध्यम और अनुवाद' पर निबंध लिखिए। 10

4. डबिंग और सबटाइटलिंग के अनुवाद की चुनौतियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10

5. निम्नलिखित गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15x2=30

क) Mr and Mrs Othello were elated. They just received news that they had inherited a house in the Delli Culta district, one of the prime locations in Lahore. Less welcome was the news that Mr Othello's father had died and they had to conduct the proper funeral rites for him. In addition, they had to handle all the details concerning his demise before they could inherit the house. This was revealed by the lawyer in charge of the late Mr Othello's will. An observer would not be wrong in surmising that the son was not close to his father.

The young Othello was the only son of the late Othello. He had a fierce row with his father when he wanted to marry his present wife, Dean, a pretty Australian and settle down with her in her homeland. The result was that his father had withdrawn all financial support and severed all ties with him. It was therefore a surprise for Alvin, the younger Othello, when he received news of the surprise windfall. "The old man must have forgiven me," he thought to himself gleefully. Because he was not doing well in Australia, this was an opportune time to settle in Lahore.

ख) In 1274, Italian explorers Marco and Niccolo Polo set out on a 24 year journey in which they traveled the famous Silk Road from Italy, through brutal deserts and towering mountains to eastern China. They traveled over 4,000 miles in all. Marco and Niccolo were among the very first Europeans to explore the fabled empire of China. In China, Marco Polo even worked for ruler Kublai Khan. Polo detailed his experiences and findings in China by writing a book. Polo described materials and inventions never before seen in Europe. Paper money, a printing press, porcelain, gunpowder and coal were among the products he wrote about. He also described the vast wealth of Kublai Khan, as well as the geography of northern and southern China. European rulers were very interested in the products Polo described. However, trading for them along the Silk Road was dangerous, expensive and impractical. European rulers began to wonder if there was a sea route to the east to get the products they wanted at a reasonable price.

5. निम्नलिखित गद्यांशों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 15x2=30

क) वीरवर अमरसिंह मारवाड़ के राठौड़ राजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनके समय में राजस्थान के प्रायः सभी राजपूत नरेश प्रतापी मुगल सम्राट शाहजहाँ के अधीन हो चुके थे। नियमानुसार प्रत्येक राजपूत नरेष को स्वयं अथवा अपने पुत्र को शाही दरबार में उपस्थित रखना पड़ता था। वहाँ वे अपनी वीरता और पराक्रम के बल पर उन्नति करते थे।
अमरसिंह राठौड़ भी शाहजहाँ के दरबार में किसी उच्च पद पर नियुक्त थे; किंतु इस कारण के अतिरिक्त दूसरा मुख्य कारण और भी था। अमरसिंह के बचपन से ही तेजस्वी और उदंड होने के कारण मारवाड़ के सभी सामंत–सरदार अमरसिंह से रुष्ट रहने लगे, यहाँ तक कि उनके पिता गजसिंह भी उनसे अप्रसन्न रहते थे। मारवाड़–नरेष के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण अमरसिंह राज्य–सिंहासन के वास्तविक उत्तराधिकारी थे, किंतु गजसिंह ने उनका राज्याधिकार से च्युत कर अपने छोटे पुत्र यषवंतसिंह को युवराज बना दिया था। मारवाड़ सिंहासन से कुछ संबंध न रहने के कारण अमरसिंह शाही दरबार में ही रहा करते थे। दरबार में उन्होंने अच्छी ख्याति प्राप्त की थी और बादषाह ने भी प्रसन्न होकर 'तीन हजारी' का मनसब और 'राव' की उपाधि देकर नागौर का इलाका उनके आधीन कर दिया था।
पैतृक राज्याधिकार से वंचित किए जाने पर भी अमरसिंह ने अपने बाहुबल से यह सम्मान प्राप्त किया था; किंतु जिस उदंड स्वभाव के कारण उनको स्वदेष और युवराज पद तक से वंचित रहना पड़ा, उसने यहाँ भी उनका पीछा न छोड़ा, जिसके परिणाम स्वरूप उनको अकाल में ही इस संसार को छोड़ना पड़ा।

ख) दो गोल से पिछड़ने के बावजूद शनिवार को भारतीय हॉकी टीम ने न्यूजीलैंड को 3–2 से हराकर राष्ट्रमंडल खेलों के फाइनल में प्रवेश किया। रविवार को फाइनल में भारत का मुकाबला मौजूदा चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया से होगा, जो 2010 राष्ट्रमंडल खेलों फाइनल की पुनरावृत्ति होगी। एक अन्य सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को 4–1 से हराया।

नियमित कप्तान सरकार सिंह के बिना खेल रहे भारत के लिए कार्यवाहक कप्तान रुपिन्दर पाल सिंह, रमनदीप सिंह और आकाशदीप सिंह ने गोल दाग कर टीम के लिए कम से कम रजत पदक पक्का कर दिया। किवी टीम ने दूसरे मिनट में साइमन चाइल्ड के गोल की बदौलत 1–0 की बढ़त हासिल कर ली थी। दसवें मिनट में कीवी टीम को पेनाल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन वह इसे गोल में तब्दील नहीं कर सके। हालाँकि 18वें मिनट में मिले पेनाल्टी कॉर्नर में न्यूजीलैंड ने कोई गलती नहीं की और निक हेग ने गेंद गो गोल पोस्ट में डाल कीवी टीम को 2–0 की बढ़त दिला दी। 27वें मिनट में भारत को एकमात्र पेनाल्टी कॉर्नर मिला और ड्रेग फ्लिकर वी. रघुनाथ ने गेंद को नेट में डाला, रुपिन्दर ने गोल कर भारत को पहली सफलता दिलाई।

*****